P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन

नमितेश गुप्ता
शोध छात्रा,
गृहविज्ञान विभाग,
वी0 एम0 एल0 जी0 पी0 जी0 कॉलेज,
गाजियाबाद, उ0प्र0

उमा जोशी
एसोसिएट प्रोफेसर,
गृहविज्ञान विभाग,
वी0 एम0 एल0 जी0 पी0 जी0 कॉलेज,
गाजियाबाद, उ0प्र0

सारांश

वयः सन्धि अवस्था वह अवस्था है जबकि एक व्यक्ति लैंगिक परिपक्वता को प्राप्त कर के सन्तानोत्पत्ति की योग्यता को प्राप्त करता है।'' (डाइन ई0 पपालिया 2004) यौन विभिन्नता इस अवस्था को प्रभावित करती है। बालिकाओं में यह अवस्था सामान्यताः 11 से 13 वर्ष तथा बालकों में यह 12–13 वर्ष के मध्य होती है, यद्यपि यह अवस्था अत्यन्त कम समय की होती है तथापि शारीरिक विकास एवं परिवर्तन के दृष्टिकोण से मानसिक, सांवेगिक तथा सामाजिक विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।इस अवस्था में मानव न तो पूर्णतः बालक होता है और न ही पूर्ण किशोर, इसी कारण बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था के संवेग एवं व्यवहार सम्मलित रूप से इसमें दृष्टिगोचर होते है ''वयः संधि अवस्था बढ़ी हुयी संवेगात्मक तनाव की अवस्था है, जो उसके शारीरिक और ग्रन्थीय परिवर्तनों के कारण उत्पन्न होती है।'' (एलिजावेथ बी0 हरलॉक,1978) वयः सन्धि अवस्था समस्याओं का घर है तथा उन्हें इन समस्याओं से निजात दिलाने के लिये माता पिता एवं शिक्षक का सहयोग एवं उचित समायोजन का होना अति आवश्यक है और इसमें भी माता की भूमिका को सर्वोपरि माना गया है क्योंकि शिशु को जन्म देने से लेकर वयः सन्धि अवस्था तक की सम्पूर्ण गतिविधियों, आवश्यकताओं, व्यवहारात्मक विशेषताओं, रूचियों, सम्पूर्ण परिवर्तनों तथा इनके कारण उत्पन्न समस्याओं को एक माता अधिक व्यापक रूप से जानती है, यही कारण है कि परिवार में माता की भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया है। वर्तमान समय में महिलाओं में जीवनवृत्ति (कैरियर) के प्रति बढ़ती जागरूकता एवं आवश्यकताओं के कारण कार्यशील माताओं की संख्या बढ़ती जा रही है तथा इसके साथ ही यह प्रश्न भी उठ रहा है कि घरेलू तथा कार्यरत स्त्रियों में से एक माता के रूप में कौन ज्यादा सफल है इसी तथ्य को ध्यान में रखकर घरेलू तथा कार्यरत महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन विषय का चयन किया गया। जिसके तीन उद्देश्य निर्धारित किये गये–घरेलू महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन, कार्यरत महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन, एवं घरेलू तथा कार्यरत महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन।

शोधकार्य की पूर्णता हेतु संयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा जिला गोरखपुर के 5 इन्टर कॉलेज से क्रमशः 200 –200 घरेलू तथा कार्यरत महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं का चयन किया गया। तथ्य संकलन हेतु डा0 (श्रीमती) ए0 सेन गुप्ता एवं डा0 ए0के0 सिंह द्वारा रचित 'इमोशनल स्टेबिलिटी टेस्ट फॉर चिल्ड्रेन' का प्रयोग किया गया जिसमें वस्तु निष्ठ प्रकार के 15 प्रश्नो का संकलन है। वर्तमान शोध कार्य के अध्ययन में दो प्रकार के चरों का प्रयोग किया गया :–स्वतन्त्र चर–घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें' एवं कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें' तथा आश्रित चर में संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन किया गया, जिसके आधार पर समग्र रुप से यह परिणाम प्राप्त हुआ कि – कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरताका मध्यमान 5. 27 एवं प्रमाणिक विचलन 1.77 है, तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का मध्यमान 6.12 एवं प्रमाणिक विचलन 2.62 पाया गया। कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का स्तर क्रमशः 113, 85, 02 उच्च, मध्यम, निम्न पाया गया तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का स्तर क्रमशः 97, 91, 12 उच्च, मध्यम, निम्न पाया गया। इस प्रकार कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता से तुलनात्मक रुप से अधिक है। वास्तव में संवेगात्मक स्थिरता आपसी प्रेम, समझ, एवं तालमेल पर निर्भर करती है, इस अवस्था में माता – पिता एवं शिक्षक का सहयोग एवं उचित समायोजन का होना अति आवश्यक है। दोनों समूहों के बीच जो अन्तर है वह वास्तविक है न कि संयोगवश।

मुख्य शब्द : कार्यरत महिलायें, घरेलू महिलायें, वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें, संवेगात्मक स्थिरता।

प्रस्तावना

संवेग मानव मन का आंन्तरिक पक्ष है जो उसके सम्पूर्ण बाह्य जगत को जीवनपर्यन्त प्रभावित करता है। विषेशतयः वयःसन्धि अवस्था पर इन संवेगों का सर्वाधिक प्रभाव दृष्टिगोचर होती है। यौन विभिन्नता इस अवस्था को प्रभावित करती है। बालिकाओं में यह अवस्था सामान्यतः 11 से 13 वर्ष तथा बालकों में यह 12–13 वर्ष के मध्य होता है। वयःसंन्धि अवस्था में प्रोजेस्ट्रॉन तथा इस्ट्रोजन हार्मोन सक्रिय हो जाते है इसी कारण बालक तथा बालिका में क्रमशः पुरूषोचित एवं स्त्रीयोचित गुणों का विकास एवं परिवर्तन आरम्भ हो जाता है और वह अपने स्वरूप के परिवर्तन, सामाजिक स्थिति में बदलाव, सांवेगिक तथा मानसिक अस्थिरता का उचित समायोजन कर पाने में कठिनाई का अनुभव करते है। वयःसन्धि अवस्था बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था को मिलने के लिये एक सेतु का कार्य करती है। इस अवस्था में वह न तो पूर्णतः बालक होता है और न ही पूर्ण किशोर, इसी कारण बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था के संवेग एवं व्यवहार सम्मलित रूप से इसमें दृष्टिगोचर होते है और इसी कारण व्यक्ति कभी बाल्यावस्था एवं कभी किशोरावस्था के विचारों से प्रभावित होता है और इन्ही दो भूमिकाओं के कारण उसमें भूमिका द्वन्द (Role Conflict) चलता रहता है। एरिक एरिक्सन ने इस आयु को 'अहम् पहचान बनाम भूमिका संभ्रान्ति'(Igo identity versus Role confusion) की अवस्था कहा है। वयःसन्धि अवस्था की प्रमुख विशेषतायें इस प्रकार है –

1. वयःसन्धि अवस्था एक परिवर्तन की अवस्था है इस अवस्था में अनेक परिवर्तन होते है जैसे – शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक, संवेगात्मक, बौद्धिक, सामाजिक इत्यादि, इन परिवर्तनों के कारण बाल्यावस्था की आदतें, व्यवहार के लक्षण समाप्त हो जाते है तथा उनका व्यवहार परिपक्व किशोरावस्था की ओर होने लगता है।
2. वयःसन्धि अवस्था एक संवेगात्मक अस्थिरता की अवस्थाहै क्योंकि इस अवस्था में वे कभी तो अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करते है तो कभी निराशा के सागर में डूब जाते है जिसका प्रमुख कारण तीव्र शारीरिक परिवर्तन, हारमोन परिवर्तन, ज्ञान एवं अनुभवों की कमी, उचित परामर्श एवं दिशा निर्देशन का आभाव एवं अस्थिरता है।
3. वयःसन्धि अवस्था एक अस्पष्ट स्थिति की अवस्था है इस अवस्था में परिवार एवं समाज द्वारा कभी उन्हें बच्चा समझा जाता है तो कभी बड़ा ऐसी स्थिति में वो नहीं समझ पाता कि कब उसे बड़ों जैसा व्यवहार करना चहिये और कब छोटा, इसी कारण उनकी स्थिति अस्पष्ट बनी रहती है।
4. वयःसन्धि अवस्था एककामुकता जागरण की अवस्थाहै शारीरिक बृद्धि एवं हारमोन परिवर्तन के कारण उनमें कामेच्छा की जागृति होने लगती है। इस समय कामुकता तीन प्रकार की होती है– स्वप्रेमी, सजातीय कामुकता एवं विषमलिंगी कामुकता।
5. वयःसन्धि अवस्था संक्रान्ति की अवस्था है यह बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के मध्य एक सेतु का कार्य करती है। इस अवस्था में बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था दोनो की विशेषतायें दृष्टिगोचर होती है।
6. वयःसन्धि अवस्था समस्या बाहुल्य की अवस्थाहै इस अवस्था में वे अनेक समस्याओं से घिरे रहते है विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण, व्यवसाय चयन, तीव्र गति से हो रहे शारीरिक परिवर्तन जैसी समस्यायें इनमें कुण्ठा, तनाव, एवं हीन भावना भर देती है।
7. वयः सन्धि अवस्था उमंगपूर्ण कल्पना की अवस्थाहै वे अपनी कल्पनाओं में अपनी उन इच्छाओं की पूर्ति करते है जो वास्तविक जगत में शीघ्र सम्भव नहीं होती। ऐसी उमंगपूर्ण कल्पनाओं से उन्हें असीम सुख व शान्ति मिलती है।
8. वयः सन्धि अवस्था आत्मनिर्भरता की अवस्थाहै वे अपने सभी आवश्यक कार्य स्वयं करने लगते है आत्मनिर्भरता की ये ही भावना उन्हें भविष्य के लिये तैयार करती है।

एलिजावेथ बी0 हरलॉक ने इस अवस्था के संवेगात्मक जीवन के सम्बन्ध में लिखा है कि –''वयः संधि अवस्था बढ़ी हुयी संवेगात्मक तनाव की अवस्था है, जो उसके शारीरिक और ग्रन्थीय परिवर्तनों के कारण उत्पन्न होती है'। बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था की तुलना में इसमें संवेगात्मक अस्थिरता और अतिसंवेगात्मक व्यवहार अधिक पाया जाता है।

विभिन्न मनोवैज्ञानिक इस अवस्था में संवेगात्मक अस्थिरता के निम्न प्रमुख कारण बताते हैं –

1. तीव्र शारीरिक विकास
2. हार्मोन में परिवर्तन
3. ज्ञान एवं अनुभव का विकास
4. महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति न होना
5. शिक्षकों एवं माता–पिता द्वारा सही समय पर उचित मार्ग–दर्शन नहीं दिया जाना, आदि।

हरलॉक ने इस अवस्था की समस्याओं के विषय में बताया है कि वयःसन्धि अवस्था की यह समस्यायें शारीरिक बनावट और स्वास्थ्य से सम्बन्धित, परिवार में पारिवारिक सम्बन्ध, परिवार के बाहर के लोगों से सम्बन्ध, विपरीत लिंग के लोगों से सम्बन्धित, स्कूल कॉलेज के कार्य, भविष्य की समस्यायें जैसे शिक्षा व्यवसाय के चयन, सैक्स, नैतिक व्यवहार धर्म और अर्थ से सम्बन्धित समस्यायें हैं।इस प्रकार वयःसन्धि अवस्था समस्याओं का घर है तथा उन्हें इन समस्याओं से निजात दिलाने के लिये माता –पिता एवं शिक्षक का सहयोग एवं उचित समायोजन का होना अतिआवश्यक है और इसमें भी माता की भूमिका सर्वोपरि है क्योंकि बेटी की समस्याओं के निवारण में उसकी माँ एक सहेली, सलाहकार, मार्गदर्शक, शुभचिंतक तथा सजग अभिभावक के रूप में प्रमुख भूमिका का निर्वहन करती है। इस प्रकार वयः सन्धि अवस्था में माता तथा पुत्री का अच्छा सामन्जस्य जहाँ इस अवस्था में उत्पन्न समस्या का उत्तम समाधान है, वहीं इस रिश्ते में किसी प्रकार की बाधा समस्याओं के बढ़ने का एक प्रमुख कारण बन सकती है।

वर्तमान समय में महिलाओं में जीवनवृत्ति (कैरियर) के प्रति बढ़ती जागरूकता एवं आवश्यकताओं के

कारण कार्यशील माताओं की संख्या बढ़ती जा रही है भारतवर्ष में आज कामकाजी महिलाओं की संख्या लगभग 1 करोड़ से भी अधिक हो गयी है। कृषि और निर्माण कार्य में तो पहले से ही महिलायें सक्रिय थीं लेकिन आज उनका कार्यक्षेत्र और भी व्यापक हो गया है। एक माता के रूप में कार्यशील नारी को दोहरी जिम्मेदारी का निर्वहन करना पड़ता हैं जिसके परिणामस्वरूप महिला पर घर में अपनी मातृत्व सम्बन्धी जिम्मेदारियों के सफलतापूर्वक निर्वहन करने दायित्व होता है साथ ही घर से बाहर भी उसे एक जिम्मेदार कार्यकर्ता की भूमिका निभानी होती है। घरेलू माताओं की श्रेणी मेंउन माताओं को रखा जा सकता है जो कि अर्थोपार्जन के उद्देश्य से कार्य न करके घर में रहकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करती हैं तथा आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर रहती है।

इसके साथ ही यह तथ्य भी विचारणीय है कि घरेलू तथा कामकाजी स्त्रियों में से एक माता के रूप में कौन ज्यादा सफल है क्योंकि कामकाजी महिलायें जब थक कर घर आयेगी तो उन्हे अपने घर के दायित्वों को भी निभाना होता है और उनका अधिकांश शेष समय घर के कार्यो में ही व्यतीत हो जाता है जिसके कारण संतान के लिये उनके पास समय कम होता है परन्तु अगर सभी कायों को व सही तरीके से सही समय पर किया जाये तो कामकाजी महिलायें भी अपनी बालिकाओं का सही मार्गदर्शन कर सकेंगी तथा घर और बाहर के कार्यो में समायोजन कर पायेंगी। इसके साथ ही ये महत्वाकांक्षी महिलायें अपनी बालिकाओं के उज्जवल भविष्य के प्रति काफी सतर्क रहती है। कैरियर के अनुरूप कक्षा के विषयों का चुनाव, वांछित विषय मिलना, विद्यालय का चुनाव, अविभावकों की आशायें, किशोरियों को मनोवैज्ञानिक रूप से तनाव देने वाले होते हैं जिनका समाधान कामकाजी महिलायें भली–भाँति करने में समर्थ होती है, दूसरी ओर वह माँ जो घरेलू है उसके पास अपनी बालिकाओं का कैरियर बनाने के लिये काफी समय है तथा वह वांछित समय अपनी पुत्री के साथ बाँट सकती है तथा हर समस्या के समय उपलब्ध होती है मगर वह घर से बाहर कार्यशील नहीं है इसी कारण उसे बाहरी दुनिया का अनुभव भी कम है कि इस अवस्था में अपनी बालिका के लिये क्या सही निर्णय लें इस विषय में वे कम सहयोग कर पाती है। घरेलू तथा कामकाजी स्त्रियों में से एक माता के रूप में कौन अधिक सफल है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन विषय का चयन किया गया।

साहित्यावलोकन

शोधकर्ता के शोध से सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक जो कार्य हुए है उनमें प्रमुख निम्नलिखित है –

मेटिल्डा जेब्स लथमेरी, एवं डॉ0 महेश्वरी के0 कविता (2018)पेटावाइथले ट्रिकी के सेवईसन्थी मेट्रिकुलेशन स्कूल के 6 से 10 कक्षाओं में अध्ययनरत 65 कार्यशील माताओं की सन्तानों पर शोध के पश्चात् यह परिणाम प्राप्त हुआ कि – 54 प्रतिशत विद्यार्थी अपनी माता के व्यवसाय से सन्तुष्ट थे तथा शेष अपनी माता को गृहिणी के रुप में ही देखना चाहते थे। 76 प्रतिशत ने यह माना कि उन्हें अपनी माता से और अधिक प्यार और स्नेह की आवश्यकता है। 82 प्रतिशत सन्तानों ने यह माना कि उन्हें अपनी माता के साथ किसी तथ्य पर बात या बहस करने हेतु समय कम मिलता है। 72 प्रतिशत ने यह माना कि उन्हें और अधिक प्यार स्नेह एवं अच्छे घरेलू वातावरण की आवश्यकता है।

डॉ0 शिवकुमार जी0 (जनवरी 2017) ने किशोरावस्था में संवेगात्मक समायोजन सम्बन्धी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 100 किशोर एवं किशोरियों पर किया। विद्यालयों के चयन हेतु स्तरीकृत प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया तथा इनमें से संयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयनित 100 किशोर एवं किशोरियों पर अध्ययन के परिणामस्वरूप यह तथ्य प्रकाश में आया कि किशोरावस्था उच्च संवेग प्रधान अवस्था है जोकि प्यार, भय, क्रोध, हँसी, एवं आँसुओं के द्वारा अभिव्यक्त की जाती है। ये संवेग अवसाद की भावना को रोकती है और किसी भी कार्य में होने वाली गलती या गड़बड़ी से संरक्षण करती है। अध्ययन से प्राप्त परिणामों के अनुसार किशोरावस्था के संवेगों पर लिंग तथा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र जैसे चरों का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। इस अवस्था में किशोर एवं किशोरियाँ एक समान संवेगात्मक संतुलन रखते है।

सक्सेना मीनाक्षी, (2013) द्वारा संवेगात्मक समस्याओं का किशोरावस्था में समायोजन पर प्रभाव सम्बन्धी अध्ययन में यह तथ्य प्रकाश में आया कि किशोरावस्था में समायोजन पर आयु, जन्मक्रम, शिक्षा का स्तर, जाति समुदाय, लिंग, परिवार का स्वरूप, परिवार में सदस्यों की संख्या, पारिवारिक आय जैसे घटक महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। 15 वर्ष एवं अधिक आयु वर्ग, 1–2 जन्म क्रम, 11–12 कक्षाओं में अध्ययनरत, सामान्य एवं पिछड़ी जाति के 1–5 तथा 6–11 सदस्यों वाले एकल परिवार, किशोर तथा मध्यम एवं निम्न आय वर्ग वाले किशोर एवं किशोरियों की तुलना में 13–14 आयु वर्ग, तीसरे जन्म क्रम, 09–10 कक्षाओं में अध्ययनरत, अनुसूचित जाति के 11–15 सदस्यों वाले संयुक्त परिवार, किशोरी तथा उच्च आय वर्ग के किशोर एवं किशोरियों में शारीरिक, संवेगात्मक, एवं सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें अधिक पायी गयी।

खान महमूद अहमद एवं हसन आसमा,(2012) के द्वारा कार्यरत एवं घरेलू महिलाओं के बच्चों के 100 बच्चों (50 कार्यरत एवं 50 घरेलू महिलाओं के बच्चे) पर संवेगात्मक बुद्धिमतता सम्बन्धी अध्ययन के परिणामस्वरूप यह तथ्य प्रकाश में आया कि कार्यरत एवं घरेलू महिलाओं के बच्चों के संवेगात्मक बुद्धिमतता में सार्थक अंतर पाया गया इनमें स्वजागरुकता, समानुभूति, आत्म अभिप्रेरणा, संवेगात्मक स्थिरता, प्रबन्धन सम्बन्ध, ईमानदारी, आत्मविश्वास एवं परोपकार की भावना में सार्थक अंतर पाया गया। कार्यरत महिलाओं की तुलना में घरेलू महिलाओं के बच्चों में स्पष्ट प्राथमिकता, दूसरों की चिन्ताओं पर अधिक ध्यान देने की भावना पायी गयी। इनमें लोगों के प्रति मित्रतापूर्ण व्यवहार, सामाजिकता, सहयोग, कौशलपूर्ण व्यवहार पाया गया। ये नवीन विचारों

एवं सूचनाओं के प्रति अधिक जागरुक थे, वे अच्छी तथा बुरी परिस्थितियों का दृढ़ता से सामना करते हैं तथा अपनी कमजोरियों के प्रति अधिक सजग रहते हैं। वे अधिक सहयोगी, सहकारी, प्रजातान्त्रिक, होते हैं तथा पहल करने हेतु लोगों को उत्साहित करने में अधिक योग्य होते है। परन्तु मूल्य प्रतिमानों के निर्धारण में सार्थक अंतर पाया नहीं पाया गया।

शर्मा, शुभा (2009) ने कार्यरत एवं घरेलू महिलाओं की किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण से सम्बन्धित अध्ययन में यह निष्कर्ष ज्ञात किया कि "कार्यरत एवं घरेलू दोनों की ही किशोरियाँ मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी दबाव अनुभव करती हैं तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षण से यह परिणाम प्राप्त हुआ कि घरेलू महिलाओं की किशोर बालिकायें अपने भविष्य एवं व्यवसाय का चयन स्वयं करती है अथवा घर के बड़े सदस्यों के कहे अनुसार करती हैं, इसी कारण ये व्यवसाय के चयन का निर्णय बहुत सोचकर देर से ले पाती हैं। इसी कारण इनके मानसिक स्वास्थ्य का स्तर कार्यरत महिलाओं की किशोरियों से गिरा हुआ रहता है, इनमें तुलनात्मक रूप में मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें जैसे– चिन्ता, बैचेनी, नर्वसनेस, अकेलापन, निराशा, क्रोध, सिरदर्द, थकान, नींद न आना, अपच, एसीडिटी आदि की समस्यायें अधिक पायी गयी, जबकि कार्यरत महिलाओं की किशोर बालिकाओं में व्यवसाय चयन की अभिवृत्ति, स्वयं अन्दाजा लगाना, व्यवसाय सम्बन्धी सूचनाएं, लक्ष्य का चुनाव, योजना बनाना, समस्या का समाधान करने की योग्यता अधिक पायी गयी। इस प्रकार इस अध्ययन से यह तथ्य प्रकाश में आया कि कार्यरत महिलाओं की किशोरियों का मानसिक स्वास्थ्य घरेलू महिलाओं की किशोरियों की अपेक्षा अधिक अच्छा है। "

शैरी (2008) ने किशोरियों में उत्तेजित व्यवहारों का वयः सन्धि अवस्था के शीध्र आने तथा माता–पिता की भूमिका सम्बन्धी एक अध्ययन 330 वयः सन्धि अवस्था की किशोरियों पर किया, तथ्यों के संकलन हेतु उनके उत्तेजित व्यवहार, विद्यालय में मारपीट तथा चोट की घटनाओं, मासिक धर्म आरम्भ होने की अवस्था तथा अपनी माता से व्यवहारात्मक सम्बन्धों के अध्ययन के परिणाम स्वरूप यह तथ्य प्रकाश में आया कि जिन एक चौथाई बालिकाओं का मासिक धर्म औसत आयु से एक वर्ष पूर्व आरम्भ हो गया था वह उत्तेजनात्मक व्यवहारों के तुलनात्मक रूप से अधिक व्यक्त करती थी, साथ ही इसी समय इस शोध में यह भी पाया गया कि वयः सन्धि अवस्था विभिन्न किशोरियों में भिन्न–भिन्न प्रभाव डालती है।

अनुसंधान प्रविधि

शोध कार्य की अध्ययन प्रक्रिया को इस प्रकार से योजनाबद्ध किया गया –

भौगोलिक क्षेत्र

इस शोध कार्य को सम्पादित करने हेतु गोरखपुर के सरस्वती विद्या मंदिर, आर्यनगर उत्तरी गोरखपुर, नवल्स नेशनल एकेडमी गोरखपुर, श्री भगवती प्रसाद कन्या महाविद्यालय गोरखपुर, आमना मुस्लिम गर्ल्स हायर सैकेण्डरी स्कूल, बहरामपुर, गोरखपुर एवं कार्मल बालिका इन्टर कॉलेज का चयन किया गया।

प्रतिचयन विधि

आँकड़ों के संग्रह हेतु प्रतिदर्श का चयन **संयोगिक प्रतिचयन विधि** द्वारा किया गया।

न्यादर्श एवं इकाइयों का चयन

न्यादर्श के चयन हेतु घरेलू तथा कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की 200–200 बालिकाओं का चयन किया गया।

तथ्य संकलन हेतु उपकरण

तथ्य संकलन हेतु गुप्ता सेन, एवं सिंह ए0 के द्वारा रचित इमोशनल स्टेबिलिटी टेस्ट फॉर चिल्ड्रेन का प्रयोग किया गया जिसमें वस्तु निष्ठ प्रकार के 15 प्रश्नो का संकलन है, प्रत्येक प्रश्न हेतु 2 विकल्प हाँ, नहीं दिये गये है जिनके लिये क्रमशः1, एवं 0 अंक निर्धारित है। परन्तु प्रश्न सं0 9 व 10 के उत्तर विकल्प हाँ, एवं नहीं हेतु क्रमशः1, एवं 0 अंक निर्धारित है। इस प्रकार प्रत्येक उत्तरदाता हेतु अधिकतम 15 प्राप्तांक निर्धारित है। अधिकतम प्राप्तांक निम्न संवेगात्मक स्थिरता को प्रदर्शित करते है एवं निम्न प्राप्तांक उच्च संवेगात्मक स्थिरता को प्रदर्शित करते है। प्राप्तांकों के आधार पर संवेगात्मक स्थिरता स्तर को 0–5 उच्च संवेगात्मक स्थिरता, 6–10 मध्यम संवेगात्मक स्थिरता एवं 11–15 निम्न संवेगात्मक स्थिरता के रुप में निर्धारित किया गया है।

चर

प्रस्तुत शोध कार्य के अध्ययन में दो प्रकार के चरों का प्रयोग किया गया –

स्वतन्त्र चर

वयःसंधि अवस्था की बालिकायें

1. कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें
2. घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें

आश्रित चर

संवेगात्मक स्थिरता।

सांख्यिकी विश्लेषण

इस शोध कार्य को करने हेतु प्राप्त आंकडों का अध्ययन करने के लिये निम्नलिखित सांख्यिकीय विश्लेषण किये गये –

1. समान्तर माध्य (Mean)
2. प्रमाणिक विचलन (Standard Deviation)
3. प्रमाणित विभ्रम (Standard Error)
4. काई स्कवायर परीक्षण (Chi-Square Test)
5. क्रान्तिक अनुपात (Critacal Ratio Value)

परिणाम एवं विश्लेषण

कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन हेतु समंक संकलन के पश्चात उसे व्यवस्थित रुप में अंकित व सारणीबद्ध किया गया। शोध अध्ययन में संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन करने के लिये चयनित बालिकाओं का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया तत्पश्चात अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि (एस0ई0डी0) का आंकलन तथा क्रान्तिक मूल्य (टी टेस्ट) का प्रयोग किया गया। कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की

वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन हेतु काई–स्कवायर टेस्ट($\chi2$) का प्रयोग किया गया । इस प्रकार संवेगात्मक स्थिरता का मूल्यांकन निम्नरूप से सामने आता है–

तालिका संख्या–1

कार्यरतमहिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरताका अध्ययन

उत्तरदाता	प्रतिदर्श का आकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	200	5.27	1.77

उपरोक्त तालिका सं0 1 के अनुसार "कार्यरत महिलाओं की वयः सन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का मध्यमान 5.27 एवं प्रमाणिक विचलन 1.77 पाया गया।

तालिका संख्या–2

घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन

उत्तरदाता	प्रतिदर्श का आकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	200	6.12	2.62

उपरोक्त तालिका सं0 2 के अनुसार "घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का मध्यमान 6.12 एवं प्रमाणिक विचलन 2.62 पाया गया।

तालिका संख्या–3

कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन

उत्तरदाता	प्रतिदर्श का आकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि	क्रान्तिक मूल्य	सार्थकता स्तर
कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	200	5.27	1.77	0.22	3.86	0.5
घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	200	6.12	2.62			

उपरोक्त तालिका सं0 3 के अनुसार "कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का मध्यमान 5.27 एवं प्रमाणिक विचलन 1.77 है, तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का मध्यमान 6.12 एवं प्रमाणिक विचलन 2.62 पाया गया। अतः निर्धारित पैमाने के अनुसार कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें प्राप्त मध्यमान के आधार पर मध्यम स्तर की संवेगात्मक स्थिरता रखती है। परीक्षण के अनुसार क्रान्तिक मूल्य 3.86 टेबल वैल्यू 1.96 से अधिक है। अतः कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता में सार्थकता स्तर 0.5 पर अन्तर है। दोनों समूहों के मध्य जो अन्तर पाया गया है वह वास्तविक है न कि संयोगवश।

तालिका संख्या–4

कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

उत्तरदाता	उच्च संवेगात्मक स्थिरता	मध्यम संवेगात्मक स्थिरता	निम्न संवेगात्मक स्थिरता	योग
कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	113 (105)	85 (88)	02 (07)	200
घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकायें	97 (105)	91 (88)	12 (07)	200
कुल योग	210	176	14	400

$$\chi2 = 8.65, \text{ T. V.} = 5.991 \text{ df} = 2$$

उपरोक्त तालिका सं0 4 के अनुसार "कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का स्तर क्रमशः 113, 85, 02 उच्च, मध्यम, निम्न पाया गया तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का स्तर क्रमशः 97, 91, 12 उच्च, मध्यम, निम्न पाया गया। कार्यरत तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता स्तर का अध्ययन करके परीक्षण करने पर आंकलित मान (कुल कैल्कुलेटिव वैल्यू) 8.65 पाया गया। जिसका प्रमाणिक मान 0.5 सार्थकता स्तर पर 5.991 है। अतः आंकलित मान प्रमाणिकमान से अधिक है। इस प्रकार दोनों समूहों के मध्य जो अन्तर पाया गया है वह वास्तविक है न कि संयोगवश।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि–वयःसंधि अवस्था बढ़ी हुयी संवेगात्मक तनाव की अवस्था है, जो उसके शारीरिक और ग्रन्थीय परिवर्तनों के कारण उत्पन्न होती है। परिवार विशेषतयः माता–पिता के संरक्षण, निर्देशन तथा पालन पोषण का इस अवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और

इसमें भी माता की भूमिका को सर्वोपरि माना गया है। कार्यरत तथा घरेल महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणामों के अनुसार कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का मध्यमान 5.27एवं प्रमाणिक विचलन 1.77 है, तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का मध्यमान 6.12 एवं प्रमाणिक विचलन 2.62 पाया गया। कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का स्तर क्रमशः 113, 85, 02 उच्च, मध्यम, निम्न पाया गया तथा घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता का स्तर क्रमशः 97, 91, 12 उच्च, मध्यम, निम्न पाया गया। इस प्रकार कार्यरत महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता घरेलू महिलाओं की वयःसन्धि अवस्था की बालिकाओं के संवेगात्मक स्थिरता से तुलनात्मक रुप से अधिक है। वास्तव में संवेगात्मक स्थिरता आपसी प्रेम, समझ, एवं तालमेल पर निर्भर करती है, इस अवस्था में माता–पिता एवं शिक्षक का सहयोग एवं उचित समायोजन का होना अति आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *गालधर, रिचर्ड (2008) 'प्रिपयेरिंग फॉर प्यूबर्टी : गाइड लाइन्स फॉर पेरेन्ट्स एण्ड केयर टेकर्स।'*
2. *गुप्ता, राम बाबू (2000) 'बाल विकास' सप्तम् संस्करण प्रकाशक–रतन प्रकाशन मंदिर, आगरा।*
3. *मेटिल्डा जेब्स लथमेरी, एवं डॉ0 महेश्वरी के0 कविता (2018) 'सोशल एण्ड साइकोलॉजिकल प्रोबलम्स फेस्ड बाइ दी चिल्ड्रन ऑफ वर्किंग वूमेन'आई0 एस0 आर0 ओ0 जनरल ऑफ ह्यूमिनिटीज एण्ड सोशल साइंस। e ISSN :2279&0837। 0सं0 15–18*
4. *सक्सेना मीनाक्षी, (2013) इफेक्ट ऑफ इमोशनल प्रोबलम्स ऑन द एडजस्टमेंट अमॉग एडोलेसेन्ट : ए साइको सोसल स्टडी। (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ) सी0 सी0 एस0 यूनिवर्सटी, मेरट।*
5. *सारस्वत, मालती (2006) 'शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा' नवीनतम संस्करण, प्रकाशक – आलोक प्रकाशन, लखनऊ। 0837 पृ0सं0 15–18*
6. *शिवकुमार जी0 (जनवरी 2017) ए स्टडी ऑन इमोशनल एडजस्टमेंट ऑफ एडोलेसेंट स्टुडेन्ट्स, इन्डियन जनरल ऑफ रिसर्च, छठा संस्करण, ISSN : 2250&199 | IC Value :79.96*
7. *सिंह, वृन्दा (2010)'मानव विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध' चतुर्थ संस्करण, प्रकाशक–पंचशील प्रकाशन, जयपुर।*
8. *हरलॉक, एलिजावेथ बी0, (2006) चाइल्ड डेवलपमेंट' पृ0 सं0 188 –196, छठा संस्करण प्रकाशक– टाटा मेक्ग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली।*
9. *हीरेमथ, कुप्पा, हंसल सरस्वती, तथा गाँओकर वी0 (2008) 'बिहेवियरल प्रॉबलम एमॉंग अर्ली एडोलेसेंट' यूनिवर्सटी*
10. *ऑफ एग्रीकल्चर साइन्सेज, धारवाड, भारत।*
11. *श्रीवास्तव, डी0 एन0 एवं वर्मा, प्रीति (2005) 'बालमनोविज्ञान : बाल विकास', ग्यारहवां संस्करण प्रकाशक विनोद*
12. *पुस्तक मंदिरआगरा। श्रीवास्तव डी0 एन0 (2010–11) सांख्यिकी एवं मापन,तृतीय संस्करण, प्रकाशक अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2।*